ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

अफ्रीकन शूकर ज्वर (African Swine Fever)

डॉ. सुवनीत पी.

पशु विकृति विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बरकछा, मिर्जापुर

सूअर का मांस दुनिया में सबसे ज्यादा खाया जाने वाला मांस है। इसलिए सम्बंधित बीमारी जैसे अफ्रीकन शूकर ज्वर(एएसएफ) फैलने के गंभीर आर्थिक परिणाम होते हैं , खासकर उन पशु पालकों के लिए जिनकी आजीविका वैश्विक पोर्क उद्योग पर निर्भर करती है और उन उपभोक्ताओं के लिए जो पोर्क की बढ़ती कीमतों का खामियाजा भुगतते हैं।

अफ्रीकन शूकर ज्वर एक अत्यधिक संक्रामक वायरल बीमारी है जिसमें घरेलू और जंगली दोनों सूअरों में उच्च मृत्यु दर (95-100 %) होती है। यह वायरस पहली बार 1900 के दशक की शुरुआत में पूर्वी अफ्रीका में खोजा गया था, 1950 के दशक के अंत में यूरोप में फैल गया और हाल ही में कई एशियाई देशों में कहर बरपाया है। इस हालिया अवधि में अफ्रीकन शूकर ज्वर का सबसे बड़ा प्रकोप अगस्त 2018 में चीन में हुआ , जो दुनिया में पोर्क का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोग ता है। इस बीमारी से सैकड़ों-हजारों सूअर मारे गये। इससे चीन का सकल घरेलू उत्पाद को भी दो फीसदी तक का नुकसान हुआ। यह सिर्फ इस रोग की भयानकता का एक उदाहरण है ।

लक्षण:

लक्षण संक्रमण फैलाने वाले वायरस के प्रकार और संक्रमित सूअरों की प्रतिरक्षा क्षमता के आधार पर भिन्न-भिन्न होते हैं। गंभीर बीमारी का कारण बनने वाले वायरस के प्रकार से संक्रमित होने पर संक्रमित सूअर 4-20 दिनों के भीतर मर जाते हैं। बुखार, भूख न लगना, थकान, रक्तस्राव के कारण त्वचा का रंग खराब होना , मल में खून आना , चलने में कठिनाई और मुंह और नाक से खून आना इत्यादि मुख्य लक्षण हैं। कम गंभीर वैरिएंट के कारण आम तौर पर मृत्यु दर कम (30-70 प्रतिशत) होती है । इस वैरिएंट के कारण सूअरों में विकास दर कम होती है तथा त्वचा पर घाव हो जाते है। इस प्रकार के लक्षण लम्बे समय तक रहते हैं । जंगली सूअरों में कभी-कभी स्पर्शान्मुख संक्रमण देखा जाता है। वे वाहक अर्थात स्वयं बिना लक्षणों के होते हुए दूसरे पशुओं में संक्रमण फैलाते रहते हैं की तरह कार्य करते है।

प्रसारण:

वायरस संक्रमित सूअरों के बीच प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संपर्क के माध्यम से फैल सकता है। यह मुख्य रूप से तब फैलता है जब अन्य सूअर संक्रमित सूअरों के मल , शरीर के तरल पदार्थ या शव के संपर्क में आते हैं। यह रोग मांस उत्पादों , मांस अपशिष्ट या सूअरों के चारे में पहुंचने वाले अन्य पदार्थों में वायरस की उपस्थिति से भी फैलता है। रोग संचरण में एक अन्य महत्वपूर्ण भूमिका जीनस ऑर्निथोडोरस के वाहक (किलनी) द्वारा निभाई जाती है। यह वायरस किलनी में लंबे समय तक जीवित रह सकता है। इनके काटने पर सुअर संक्रमित हो जाते हैं। सुअर फार्मों में उपयोग किए जाने वाले उपकरण, वाहन या सूअरों के साथ काम करने वाले लोग , और उन पर आने वाले आगंतुक रोगज़नक़ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करने में अप्रत्यक्ष भूमिका निभाते हैं। वायरस के शरीर में प्रवेश करने के बाद 4 से 19 दिनों के भीतर लक्षण दिखने शुरू हो जाते हैं। संक्रमित सूअर बड़ी मात्रा में रोगज़नक़ वायरस उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण में छोड़े गए वायरस महीनों तक जीवित रह सकते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि वायरस जमे हुए मांस में 5 महीने तक जीवित रह सकता है। स्पर्शान्मुख संक्रमणों में, रोगज़नक़ वायरस कोशिकाओं या रक्त में लंबे समय तक मौजूद रह सकता

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

है। संक्रमण से बचे रहने वाले सूअर कम से कम 70 दिनों तक वायरस फैला सकते हैं। इन कारणों से रोग तेजी से फैलता है और रोग पर नियंत्रण करना कठिन हो जाता है।

रोकथाम एवं नियंत्रण:

आज तक, विज्ञान जगत अफ्रीकन शूकर ज्वर की रोकथाम के लिए कोई टीका विकसित नहीं कर पाया है। इसके अलावा , इस बीमारी का सटीक इलाज अभी तक खोजा नहीं जा सका है। इन दो कारणों से, रोकथाम का सबसे अच्छा तरीका सभी संक्रमित सूअरों को स्वस्थ पशुओ से अलग करना एवं वैज्ञानिक पद्धति से वध करना है। यदि सुअर फार्मों में कोई असामान्य मौत या लक्षण दिखाई देते हैं, तो जितनी जल्दी हो सके निकटतम पशु कल्याण विभाग के अधिकारियों से संपर्क करें। बीमारी को छुपाने और संक्रमित सूअरों को बेचने की कोशिश से बीमारी और अधिक क्षेत्रों में फैल सकती है। संक्रमित सूअरों को विशेष निगरानी में रखा जाना चाहिए। ऐसे जानवरों को फार्म के अंदर या बाहर ले जाने से बचना चाहिए। एक शेड से दूसरे शेड या परिवार में अनावश्यक आवाजाही से बचना चाहिए। फार्म में आगंतुकों का प्रवेश बंद किया जाना चाहिए।

वैज्ञानिकों एवं पशुचिकित्सक द्वारा सुझाए गए जैव सुरक्षा मानकों का पालन करें। खेत या बाड़े में प्रवेश करते समय और बाहर निकलते समय जूते-चप्पल को कीटाणुनाशक से कीटाणुरहित करें। खेत या बाड़े में आने-जाने वाले वाहनों को भी कीटाणुरहित करें । 4 % सोडियम कार्बोनेट / 2 % सोडियम या कैल्शियम हाइपोक्लोराइट / 3% सोडियम हाइड्रॉक्साइड जैसे कीटाणुनाशकों का उपयोग करके खेत और उसके आसपास को उचित रूप से कीटाणुरहित करें। (कैल्शियम हाइपोक्लोराइट आमतौर पर उपलब्ध ब्लीचिंग पाउडर है) । संक्रमित और मृत सूअरों को संभालने वाले व्यक्ति/कर्मचारी सुरक्षात्मक उपकरण जैसे एप्रन , चश्मा, दस्ताने और गमबूट पहनें। खेत में उपयोग किए जाने वाले बर्तनों और औजारों को डिटर्जेंट से साफ करना चाहिए और अच्छी तरह से धोना चाहिए। संक्रमित खेतों से सुअर के शवों , मलमूत्र, कूड़े और अपशिष्ट चारे का उचित निपटान आवश्यक है। इन सभी सामग्रियों को चूना और नमक मिलाकर जमीन में गहराई तक दबा देना चाहिए। पिस्सू नियंत्रण के सभी उपाय किये जाने चाहिए।

अफ्रीकन शूकर ज्वर नामक यह भयानक बीमारी हाल ही में भारत के विभिन्न राज्यों और पड़ोसी देशों में पाई गई है। एक बार फिर याद रखें कि कोई प्रतिरक्षा टीके नहीं हैं और कोई इलाज नहीं है। बीमारी से बचाव के लिए सावधानी और सावधानी ही सबसे उत्तम उपाय है।